मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के नरसंहार की कहानी - मुस्लिम इतिहासकारों की जबानी

मुहम्मद बिन कासिम (सन 712-715) - मुस्लिम इतिहासकार अल क्रुफी ने अरबी के 'चच नामा' में लिखा है - सिन्ध में कुछ किले जीत लेने के बाद कासिम ने ईराक के गवर्नर, अपने चाचा हज्जाज को लिखा - 'सिविस्तान और सीसाम के किले पहले ही जीत लिए गए हैं। गैर-मुसलमानों का धर्मान्तरण कर दिया गया है या फिर उनका वध कर दिया गया है। मूर्ति वाले मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दी गई हैं।

चच नामा के अनुसार - हज्जाज के बिन कासिम को स्थायी आदेश थे कि हिन्दुओं के प्रति कोई दया नहीं की जाए, उनकी गर्दनें काट दी जाएं और महिलाओं और बच्चों को कैदी बना लिया जाए। हज्जाज के ये आदेश कुरान के अनुसार ही थे। कुरान (9:5) कहती है - जब कभी तुम्हें मूर्तिपूजक मिलें उनका वध करदो। उन्हें बन्दी बनालो, घेर लो, घात के हर स्थान पर उनकी प्रतीक्षा करो।

रेवार की विजय के बाद कासिम वहां तीन दिन रुका। तब उसने छः हजार आदमियों का वध किया। उनके अनुयायी, आश्रित, महिलाएं और बच्चे सभी गिरफतार कर लिए गए। जब कैदियों की गिनती की गई तो वे तीस हजार निकले। उनमें तीस सरदारों की पुत्रियां थीं। उन्हें हज्जाज के पास भेज दिया गया।

ब्राह्मणाबाद में कत्लेआम - मुहम्मद बिन कासिम ने सभी काफिर सैनिकों का वध कर दिया और उनके अनुयायियों और आश्रितों को बन्दी बना लिया। सभी बन्दियों को दास बना लिया और प्रत्येक का मूल्य तय कर दिया। उन काफिर दासों की संख्या एक लाख से अधिक थी।

कराची का विनाश - अल बिदौरी 'फुतुहु-उल-बुलदन' में लिखता है - कासिम की सेनाएं जैसे ही देवालयपुर (कराची) के किले में पहुँची, उन्होनें कत्लेआम, शील भंग व लूटपाट आरम्भ कर दी। यह सब तीन दिन तक चला। किले में आए सभी काफिरों - सैनिकों और नागरिकों का कत्ल और अंग-भंग कर दिया गया। सभी काफिर महिलाओं को गिरफतार कर उन्हें मुस्लिम योद्धाओं में बांट दिया गया। मुख्य मन्दिर को मस्जिद बना दिया गया। काफिरों की तीस हजार औरतों को बगदाद भेज दिया गया।

'फुतुहु-ई-बुलदान' में लिखा है - मुलतान पहुँचकर कासिम ने वहां के निवासियों का पानी का स्रोत काट दिया। आत्मसमर्पण करने वाले सभी पुरुषों, जो हथियार धारण कर सकते थे, कत्ल कर दिया। मुलतान में कासिम को एक मूर्ति के नीचे बड़ा खजाना मिला। दो सौ तीस मन सोना तथा सोने के चूरे से भरी चालीस देगें उसने प्राप्त कीं।

महमूद गजनवी (सन 997-1030) - महमूद गजनवी का प्रधानमंत्री अल-उत्वी 'तवारीख-ई-यामिनी' में लिखता है - पुरुषपुर (पेशावर) में जिहाद - अभी दोपहर भी नहीं हुआ था कि मुसलमानों ने पन्द्रह हजार 'अल्लाह के शत्रु' हिन्दुओं को काट कर कालीन की भान्ति भूमि पर बिछा दिया ताकि शिकारी जंगली जानवर और पक्षी उन्हें अपना भोजन बना लें। अल्लाह की कृपा से हमें लूट का इतना माल मिला कि वह गिणा भी नहीं जा सकता था जिनमें पाँच लाख सुन्दर पुरुष और महिलाएं हैं। यह 27-11-1001 की घटना है।

थानेसर में कत्लेआम - अल-उत्बी लिखता है - गैर मुसलमानों का रक्त इस बहुलता से बहा कि नदी के पानी का रंग बदल गया और लोग उस पानी को पी न सके।

फरिश्ता के अनुसार - मुहम्मद की सेना गजनी में दो लाख बन्दी लाई थी। हर एक सैनिक अपने साथ अनेकों दास व दासियां लाया था।

सिरासवा में नरसंहार - अल-उत्बी लिखता है - सुल्तान ने अपने सैनिकों को तुरन्त आक्रमण करने का आदेश दिया। हिन्दुओं का बड़े पैमाने पर कत्लेआम किया गया और तीन दिन लूट की गई। बड़ी संख्या में दास बनाए गए।

सोमनाथ की लूट - 'तारीख-ई-जैम-उल-मासीर' में लिखा है - सुल्तान ने शिव लिंग के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। लगभग दो करोड़ दिरहम की सम्पत्ति लूटी, बाद में मन्दिर का पूर्ण विध्वंस कर दिया, शिवलिंग के टुकड़ों को गजनी ले गया जिन्हें मस्जिद की सीढ़ियों में लगा दिया।

अल-उत्वी लिखता है - महमूद ने मथुरा में सब मन्दिरों को नापथा और आग से जलाने का आदेश दिया था। कन्नौज में उसने लगभग दस हजार मन्दिर तोड़े। जनता में जो भी सामने आया उसे कत्ल कर दिया गया। हजारों मन्दिर मस्जिदों में बदल दिए गए।

मुहम्मद गौरी (सन 1173-1206) - हसन निजाम ने अपने ऐतिहासिक लेख 'ताज-उल-मासीर' में लिखा है - सुल्तान ने जिस किले पर आक्रमण किया उसे जीत लिया, उसे मिट्टी में मिला दिया, उसकी नींव व खम्भों को हाथियों के पैरों के नीचे रौंद कर भस्मसात कर दिया, मूर्तिपूजकों को अपनी अच्छी धार वाली तलवार से काट कर नर्क की अग्नि में झोंक दिया, मन्दिरों व मूर्तियों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं।

अजमेर मे इस्लाम की स्थापना - हसन निजामी ने लिखा है - इस्लाम की सेना पूरी तरह विजयी हुई और एक लाख हिन्दू तेजी से नरक की अग्नि में चले गए। सुल्तान ने अजमेर में बेहद धन-सम्पत्ति लूटी और मन्दिरों का विध्वंस किया।

दिल्ली में मन्दिरों का विध्वंस - हसन निजामी लिखता है - सुल्तान ने दिल्ली शहर और उसके आसपास के क्षेत्रों को मन्दिरों, मूर्तियों तथा मूर्तिपूजकों से रहित कर दिया और मन्दिरों के स्थान पर मस्जिदें बना दीं।

वाराणसी का विध्वंस - हसन निजामी लिखता है - मुहम्मद गौरी की सेना ने वाराणसी में एक हजार मन्दिरों का विध्वंस किया तथा उनकी नीवों के स्थानों पर मस्जिदें बनवा दीं। तलवार की धार से हिन्दुओं को नर्क की आग में झोंक दिया। उनके सिरों से आसमान तक ऊँचे तीन बुर्ज बनाए गए और उनके शवों को जंगली जानवरों और पक्षियों के भोजन के लिए छोड़ दिया गया।

गुजरात में - हसन निजामी लिखता है - अधिकांश हिन्दुओं को बन्दी बना लिया गया और लगभग पचास हजार का तलवार से वध कर दिया गया। बीस हजार से अधिक हिन्दुओं को जिनमें अधिकतर महिलाएं थी दास बना लिया गया।

मुहम्मद बख्तियार खिलजी (सन 1204-1206) - मुहम्मद बख्तियार खिलजी को हिन्दू और बौद्ध शिक्षा केन्द्रों को नष्ट करने में विशेष रुचि थी। मिन्हाज-उज-सिराज 'तबाकत-ई-नासिरी' में लिखता है - नालन्दा में बख्तियार ने बेहर के किले को जीत लिया, बहुत सा लूट का माल उसके हाथ लगा, वहां के निवासियों, जिनमें अधिकांश मुण्डे सिर वाले ब्राह्मण थे, का वध कर दिया तथा सभी पुस्तकों समेत सब काहे को आग लगाकर भस्म कर दिया। (सम्भवतः यह नालन्दा विश्वविद्यालय था।)

कुतुबुद्दीन ऐबक (सन 1206-1210) - हसन निजामी ने अपने ऐतिहासिक लेख 'ताज-उल-मासीर' में लिखा है - कुतुबुद्दीन इस्लाम शीर्ष ओर गैर-मुसलमानों का विध्वंसक है - उसने अपने आपको शत्रुओं (हिन्दुओं) के धर्म के पूर्ण विनाश के लिए नियुक्त किया था और उसने हिन्दुओं के रक्त से भारत भूमि को

भर दिया था। उसने मूर्ति पूजकों के सम्पूर्ण समुदाय को नर्क की अग्नि में झोंक दिया था और मंदिरों और मूर्तियों के स्थान पर मस्जिदें बनवा दी थीं।

कुतुबुद्दीन ने दिल्ली में जामा मस्जिद बनवाई और जिन मंदिरों को हाथियों से तुड़वाया था उनके सोने और पत्थरों को इस मस्जिद में लगाकर इसे सजाया था।

इस्लाम का कालिंजर में प्रवेश - मन्दिरों को तोड़कर मस्जिदों में बदल दिया गया और मूर्तिपूजा का नामोनिशान मिटा दिया। ..... पचास हजार व्यक्तियों को घेरकर बन्दी बना लिया गया ओर हिन्दुओं को तड़ातड़ मारकर मैदान काला कर दिया गया।

अलाउद्दीन खिलजी (सन 1296-1316) - अब्दुल्ला वस्साफ ने अपने इतिहास प्रलेख 'तारीख-ई-वस्साफ' में लिखा है - गुजरात में मुसलमानों ने इस्लाम के लिए पूर्ण निर्दयतापूर्वक दायीं और बाईं, चारों ओर-सारी अपवित्र भूमि पर कत्ल करना शुरू कर दिया और रक्त मूसलाधार वर्षा की तरह बहा।

उन्होंने लगभग बीस हजार सुन्दर व सभ्य हिन्दू महिलाओं को और बहुत से बच्चों को बन्दी बना लिया। मुहम्मद की सेना ने सम्पूर्ण देश का विकराल विनाश किया - निवासियों के जीवनों को नष्ट किया, शहरों को लूटा, मूर्तियां तोड़ दीं और उन्हें पैरों के नीचे रौंदा। सोमनाथ की मूर्ति के खण्डों को दिल्ली भेज दिया गया और उन्हें जामा मस्जिद के प्रवेश मार्ग पर लगा दिया।

प्रसिद्ध सूफी कवि अमीर खुसरू लिखता है - देवगिरी (दौलताबाद) में अपने पहले आक्रमण द्वारा सुल्तान ने मूर्ति वाले मन्दिरों के विध्वंस द्वारा, गैर मुसलमानों की सारी अपवित्रताओं को समाप्त कर दिया ताकि अल्लाह के कानून के प्रकाश की किरणें इन अपवित्र देशों को पवित्र व प्रकाशित करें, मस्जिदों में नमाजें हों और अल्लाह की प्रशंसा हो।

खिलजी दरबार के सामयिक इतिहास लेखक जिया उद्दीन बरानी ने 'तारीख-ई-शाही' में लिखा है - अलाउद्दीन खिलजी ने हिन्दुओं की दशा इतनी दीन, पतित और कष्टपूर्ण बना दी थी कि हिन्दू महिलाएं और बच्चे मुसलमानों के घरों में भीख मांगने को मजबूर थे। हिन्दू लड़के और लड़कियों को दास रूप में बाजारों में बेचा गया। गेहूं, चावलों की तरह उनके दाम निश्चित किए गए।

मुहम्मद बिन तुगलक (सन 1326-1351) - अल-उमरी लिखता है - सुल्तान के पास युद्ध के बाद हिन्दू बन्दियों की संख्या इतनी अधिक हो गई थी कि प्रतिदिन हजारों हिन्दू दास बेच दिए जाते थे।

इब्नबतूता का प्रत्यक्ष दर्शी वर्णन - युद्ध में बन्दी बनाई गई राजाओं की पुत्रियों को अमीरों और महत्त्वपूर्ण विदेशियों को उपहार रूप में भेंट कर दिया जाता था। अन्य काफिरों की पुत्रियों को सुल्तान अपने भाईयों व सम्बन्धियों को दे देता था।

फीरोज शाह तुगलक - (सन 1357-1388) - ताजरीयत-अल-असर के अनुसार - मुस्लिम आक्रमणकारियों द्वारा भगाई हुई हिन्दू महिलाओं का केवल शील भंग ही नहीं किया जाता था वरन उन्हें अमानवीय यातनाएं दी जाती थीं जैसे लाल गर्म लोहे की सलाखों का उनकी योनियों में घुसेड़ देना, उनकी योनियों को सी देना, उनके स्तनों को काट देना।

बरानी लिखता है - बंगाल में हार के बाद फिरोजशाह ने सभी असुरक्षित हिन्दुओं का वध करने का आदेश दिया। मृतक हिन्दुओं के सिरों की गिनती 1,80,000 हो गई।

फरिश्ता लिखता है - सुल्तान ने ज्वालामुखी मन्दिर की मूर्तियों को तोड़कर, उनके टुकड़ों को गायों के मांस में लपेटकर ब्राह्मणों की गर्दनों में बंधवा दिया।

तैमूर (सन 1398-1399) - तैमूर ने अपनी जीवनी 'मुलफुजात-ई-तिमरी' में स्वयं लिखा है - भाटनिर (हनुमान गढ़) में इस्लाम के योद्धाओं ने हिन्दुओं पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया। थोड़े समय में ही किले के सभी - लगभग दस हजार व्यक्ति तलवार द्वारा काट दिए गए।

सिरसा में महान युद्ध हुआ। सभी हिन्दुओं का वध कर दिया गया, हिन्दू महिलाओं और बच्चों को बन्दी बना लिया गया। उनकी वस्तुएं और सम्पत्तियां मुसलमानों के लिए लूट का सामान हो गईं। सैनिक अपने साथ कई हजार हिन्दू महिलाओं और बच्चों को लेकर वापिस लौट आए और इन सबको मुसलमान बना लिया गया।

मैंने जंगलों और बीहड़ों में घुसकर दो हजार जाटों का वध किया।

दिल्ली के पास लोनी के किले पर मैंने आक्रमण किया। बहुत से राजपूतों ने अपनी पत्नियों और बच्चों को घरों में बन्द करके आग लगा दी और वे स्वयं युद्ध क्षेत्र में आ गए। उनमें बहुत से युद्ध में मारे गए, शेष बन्दी बना लिए गए। फिर सब बन्दी हिन्दुओं को कत्ल कर दिया गया तथा उनके घरों को लूट लिया गया।

तैमूर लिखता है कि जब से हम हिन्दुस्तान में घुसे हैं तब से अब तक एक लाख हिन्दू बन्दी बनाए गए हैं और वे सभी मेरे डेरे में हैं। फिर मैंने इस्लामी युद्ध के नियमों (8:67) के अनुसार उन सबको कत्ल करने का आदेश दे दिया और वे सभी एक ही दिन में कत्ल कर दिए गए।

फिर मैंने दिल्ली को लूटकर ध्वंस कर दिया। हिन्दुओं ने अपने ही हाथों अपने घरों को आग लगा दी और अपनी पत्नियों और बच्चों को इन घरों में जला दिया। पन्द्रह हजार तुर्क तीन दिन तक हिन्दुओं का वध करने और लूटने के काम में लगे रहे। माणिक, मोती, हीरों के रूप में अथाह धन लूटा। फिर सभी बन्दियों को कत्ल कर दिया गया और सारे शहर का विध्वंस कर दिया।

फिर मैंने अपनी सेना को आदेश दिया कि यमुना के किनारे किनारे सभी दुर्ग, नगर व ग्रामों को जीतकर सभी हिन्दुओं का कत्ल कर दिया जाए। ऐसा होने पर मैंने घोड़े से नीचे उतर कर भूमि पर लेटकर अल्लाह का धन्यवाद किया।

हरिद्वार में कुम्भ के मेले में मेरे वीर सैनिकों ने बहुत से हिन्दुओं को मौत के घाट उतारा।

तैमूर लिखता है कि मुसलमानों के लिए युद्ध में लूट का सामान उतना ही जायज है जितना उनके लिए माँ का दूध।

बाबर (सन 1519-1530) - बाबर की अपनी जीवनी बाबरनामा में लिखा है कि बाबर ने बिजौर (उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त में एक छोटा सा राज्य) में तीन हजार पुरुषों का कत्ल करवाया। फिर उनके सिरों से मीनार बनवाई। स्त्रियों और बच्चों को बन्दी बनाया।

गुरु नानक बाबर के समकालीन थे। बाबर के अत्याचारों को देखकर वे भगवान से कहते हैं - हे प्रभु! आप ऐसे नरसंहार, ऐसी यातनाओं और पीड़ा को किस प्रकार सहन कर रहे हैं ..... जब इतना भीषण नर संहार हो रहा था, इतनी भीषण कराहें निकल रही थीं, क्या तुम्हें पीड़ा नहीं हुई ?'

अकबर (सन 1556-1605) - अकबर की चितौड़ विजय के विषय में अबुल फजल 'अकबर नामा' में लिखता है - अकबर के आदेशानुसार पहले आठ हजार राजपूत योद्धाओं को हथियार विहीन कर दिया गया, फिर उनका तथा अन्य चालीस हजार कृषकों का भी वध कर दिया गया।

अकबर जिन हिन्दू राजाओं को लड़ाई में हरा देता था उनकी कन्याओं को अपने हरम में रख लेता था। सिरफ रणथम्भोर की सन्धि के अन्तर्गत शाही हरम में दुल्हन भेजने की रीति से बून्दी के सरदार को मुक्ति दी गई थी।

जहांगीर (सन 1605-1627) - जहांगीर के आदेश से सिखों के पांचवें गुरु अर्जुनदेव को लाहौर की जेल में बन्दी बनाकर उनसे कहा गया कि यदि वे दो लाख रुपए जुर्माना भर दें तब उन्हें रिहा किया जा सकता है। दो लाख रुपए जुर्माना न भरने पर उन्हें तीन दिन तक कठोर यातनाएं दी गईं। उन्हें गर्म लोहे की प्लेट पर बिठाया गया, फिर उनके शरीर पर गर्म रेत डाला गया। उन्हें एक बड़े पानी भरे कढ़ाहे में बिठाकर पानी उबाला गया। अन्त में 30 मई 1606 को उन्हें शहीद कर दिया गया।

औरंगजेब (सन 1658-1707) - औरंगजेब ने गुरु तेग बहादुर तथा उनके तीन साथियों को इस्लाम स्वीकार करने को कहा। उनके इनकार करने पर उन्हें यातनाएं देकर मारा - भाई मतिदास को आरे से चिरवाया, भाई दयालदास को खौलते पानी के कढ़ाहे में उबालकर मारा, भाई सतीदास के शरीर पर रुई लपेटकर उन्हें जिन्दा जलाकर मारा तथा अन्त में 11 नवम्बर 1675 को गुरु तेग बहादुर का सिर घड़ से अलग कर दिया गया।

गुरु गोबिन्द सिंह के दो किशोर बेटों - जोरवार सिंह और फतेह सिंह को इस्लाम स्वीकार न करने पर सरहन्द (पंजाब) में दीवार में जिन्दा चिनवा दिया गया। जब दीवार उनकी गर्दनों तक ऊँची हो गई उसे गिरा दिया गया तथा 12 दिसम्बर 1705 को उनका गला काट कर उनकी हत्या कर दी गई।

औरंगजेब ने हिन्दुओं पर और क्या क्या अत्याचार किये - इसका संक्षिप्त विवरण प्रसिद्ध इतिहासकार जादूनाथ सरकार की पुस्तक 'A Short History of Aurangzib' के आधार पर आगे दिया गया है।

सन 1644 में जब औरंगजेब गुजरात का वायसराय था उसने अहमदाबाद में नए बने चिन्तामन मन्दिर में गाय को मारकर उसे अपवित्र किया था और फिर उसे मस्जिद में बदल दिया था। उस समय उसने गुजरात में और भी बहुत से मन्दिर गिराए थे।

अपने शासन के आरम्भ में ही उसने उड़ीसा में कटक से मिदनापुर तक आने वाले सभी शहरों और कस्बों में उन सभी मन्दिरों को गिराने का आदेश दिया था जो पिछले 10 या 12 वर्षों में बनाए गए थे तथा जो पुराने मन्दिर थे उनकी मुरम्मत पर रोक लगा दी थी।

10 अप्रैल 1665 को उसकी ओर से एक आदेश जारी किया गया जिसके अनुसार बेचने के लिए बाहर से आए पदार्थों पर चुंगी मुसलमानों पर वस्तु के मूल्य का 2½% परन्तु हिन्दुओं पर वस्तु के मूल्य का 5% लगा दी गई। 9 मई 1667 को मुसलमानों के लिए चुंगी खत्म कर दी गई। परन्तु हिन्दुओं पर उतनी ही जारी रही।

जो हिन्दू मुसलमान बन जाते उन्हें इनाम दिए जाते, सरकारी नौकरी दी जाती, जेल से रिहाई दी जाती या विवादित पैत्रिक सम्पत्ति का मालिकाना हक दिया जाता।

हिन्दू सारे देश में जो मेले लगाते थे सन 1668 में उन सब पर पाबन्दी लगा दी गई। बाजारों में दिवाली और होली मनाने पर भी पाबन्दी लगा दी गई।

9 अप्रैल 1669 को उसने हिन्दुओं के सभी स्कूल तथा मन्दिर गिराने का आदेश दिया तथा हिन्दुओं की धार्मिक शिक्षा तथा पूजा पाठ पर भी पाबन्दी लगा दी। उसने फिर से बना सोमनाथ का मन्दिर, बनारस का विश्वनाथ मन्दिर तथा मथुरा का केशव राय मन्दिर भी गिराने के आदेश दिए।

जनवरी 1670 में उसने मथुरा के केशव राय मन्दिर को पूरी तरह ध्वस्त करने के आदेश दिए और मथुरा का नाम बदलकर इस्लामाबाद कर दिया।

सन 1671 में एक आदेश दिया गया कि सरकारी जमीनों का किराया वसूलने वाले सभी मुसलमान हों तथा सभी हिन्दू हैड क्लर्क तथा अकाऊँटैंट हटा दिए जाएं। उनके स्थान पर मुसलमानों को भरती किया जाए। कानूनगो बनने के लिए भी मुसलमान होना जरूरी कर दिया गया।

कुछ हिन्दू जो मुसलमान बन गए थे उनका शहर में गाजे बाजे के साथ हाथियों पर जलूस निकाला गया, दूसरों को प्रतिदिन का वजीफा दिया गया जो कम से कम चार आना (एक रुपए का चौथाई भाग) था।

जजिया - जजिया वह टैक्स था जो गैर मुस्लिमों को मुस्लिम शासन में रहने के लिए देना पड़ता था। 2 अप्रैल 1679 से सभी गैर मुस्लिमों पर जजिया टैक्स लगा दिया गया। इस टैक्स का उद्देश्य इस्लाम को फैलाना था। बहुत से हिन्दू जो जजिया टैक्स न दे सके मुसलमान बन गए। जजिया टैक्स का विरोध करने वाले बहुत से हिन्दुओं को हाथियों के पैरों तले रौंदवा दिया गया।

जून 1680 में जयपुर प्रदेश की राजधानी अम्बेर में स्थित सभी मन्दिर तोड़ दिए गए।

मार्च 1695 में राजपूतों को छोड़ और सभी हिन्दुओं को पालकी में, हाथी पर या घोड़े पर बैठने की तथा हथियार लेकर चलने की मनाही कर दी गई।

- - - - - - - - - - -

धर्मवीर हकीकत राय का बलिदान - प्रसिद्ध इतिहासकार डा. गोकुल चन्द नारंग लिखते हैं - हकीकत राय का जन्म पंजाब के प्रसिद्ध नगर स्यालकोट (अब पाकिस्तान में) में सन 1719 में एक इज्जतदार खत्री भागमल के घर हुआ था। दस वर्ष की आयु में हकीकत राय को फारसी पढ़ने के लिए मुल्ला के पास मस्जिद में भेज दिया गया। वहां मुसलमान बच्चों से कुछ कहा सुनी हुई। हकीकत राय पर आरोप लगाया गया कि उसने मुहम्मद की बेटी फातमा को गाली दी है। सजा सुनाई गई कि हकीकत राय मुसलमान बन जाए अन्यथा मृत्यु दण्ड भोगे। हकीकत राय ने मुसलमान बनने से इंकार कर दिया। सन 1734 में बसन्त पंचमी के दिन लाहौर की कत्लगाह में हजारों लोगों के सामने 14 वर्ष के बालक हकीकत राय का सर तलवार के एक वार से अलग कर दिया गया।

- - - - - - - - - - -

अहमद शाह अबदाली (सन 1757-1761) - अहमद शाह अबदाली की सेना ने सन 1957 में मथुरा में मार-काट का तांडव मचाया, निहत्थे नागरिकों और पुजारियों को काटा, मूर्तियां तोड़ दीं तथा बहुत सा धन लूटा। हिन्दू महिलाओं को बन्दी बनाकर वे अपने साथ ले गए। बहुत सी महिलाओं ने राक्षसों के हाथ पड़ने से बेहतर समझा कि वे यमुना नदी में कूद गईं या उन्होंने अपने घरों के कूओं में कूदकर जान देदी।

अहमद शाह की सेना ने मथुरा की भान्ति वृन्दावन और गोकुल में भी बड़ा नरसंहार किया।

पानीपत में जेहाद (सन 1761) - युद्ध स्थल पर ही अट्ठाईस हजार शव थे। युद्ध के अगले दिन पूर्ण निर्दयतापूर्वक नरसंहार आरम्भ हुआ। जो मराठे शहर में छिप गए थे उन्हें ढूढ़ कर कत्ल किया गया। प्रत्येक सैनिक ने अपने अपने डेरे से सौ या दो सौ बन्दी बाहर निकाले और उनका डेरों के बाहरी क्षेत्रों में तलवारों से वध कर दिया गया।

टीपू सुल्तान (सन 1786-1799) - सुल्तान ने 22 मार्च 1788 को अब्दुल खादर को लिखा - बारह हजार से अधिक हिन्दुओं को इस्लाम में धर्मान्तरित कर लिया गया है। इनमें अनेकों नम्बूदरी ब्राह्मण हैं। इस उपलब्धि का हिन्दुओं में व्यापक प्रचार किया जाए। स्थानीय हिन्दुओं को आपके पास लाया जाए और उन्हें इस्लाम में धर्मान्तरित किया जाए। किसी भी नम्बूदरी को छोड़ा न जाए।

सुल्तान ने 14 दिसम्बर 1788 को कालीकट के अपने सेना नायक को लिखा - मैं तुम्हारे पास मीर हुसैन अली के साथ अपने दो अनुयायी भेज रहा हूँ। उनके साथ तुम सभी हिन्दुओं को बन्दी बना लेना और उनका वध कर देना। मेरा आदेश है कि बीस वर्ष से कम उम्र वालों को कारागार में रख लेना और शेष में से पांच हजार को पेड़ पर लटकाकर मार देना।

सुल्तान ने 19 जनवरी 1790 को बदरुज समाँ खान को लिखा - क्या तुम्हें ज्ञात नहीं है कि निकट समय में मैंने मालावार मे एक बड़ी विजय प्राप्त की है - चार लाख से अधिक हिन्दुओं को मुसलमान बनाया है।

टीपू की तलवार पर फारसी भाषा में लिखा था - मेरी चमकती तलवार अविश्वासियों (गैर मुस्लिमों) के विनाश के लिए आकाश की कड़कती बिजली है।

एक पुर्तगाली यात्री और इतिहासकार फ्रा बारटोलोमाको ने 1790 में मालवार में जो कुछ देखा उसे अपनी पुस्तक 'Voyage to East Indies' में लिखा है - उस बर्बर टीपू द्वारा नंगे हिन्दू और ईसाई लोगों को हाथियों की टांगों से बंधवा दिया जाता था और हाथियों को तब तक दौड़ाया जाता था जब तक कि उन असहाय प्राणियों के शरीरों के चिथड़े-चिथड़े न हो जाते। मन्दिरों और गिरजाघरों में आग लगाने, उन्हें खण्डित करने और ध्वंस करने के आदेश दिए जाते थे।

'दी मैसूर गजेटियर' बताता है कि टीपू ने दक्षिण भारत मे आठ सौ से अधिक मन्दिर नष्ट किए थे।

'गजेटियर आफ केरल' में लिखा है - टीपू ने हजारों हिन्दुओं को बलात इस्लाम में धर्मान्तरित कर लिया तथा उन्हें उनके पैतृक घरों से भगा दिया।

- - - - - - - - - - - - - -

सीताराम गोयल ने 736 पृष्ठों में तथा दो भागों में बड़े विस्तार से एक पुस्तक 'HINDU TEMPLES – WHAT HAPPENED TO THEM' लिखी है जिसे VOICE OF INDIA, NEW DELHI ने छापा है। लेखक ने 80 मुस्लिम इतिहासकारों के हवाले से 61 बादशाहों, 63 सेना नायकों और 14 सूफियों का वर्णन किया है जिन्होंने हिन्दू मन्दिरों को तोड़ा हैं। ज्यादातर मामलों में तोड़े गए मन्दिर के सामान से उसी स्थान पर मस्जिद या मदरसा बना दिया गया है। हर बार मन्दिर तोड़कर अल्लाह का धन्यवाद किया गया कि उसने मुहम्मद के मजहब की सेवा करने का अवसर प्रदान किया। लेखक ने भारत के विभिन्न प्रान्तों और नगरों में 1856 ऐसी मस्जिदों को चिन्हित किया है जो मन्दिरों को तोड़कर उनके स्थान पर बनाई गई थीं।

कृष्णचन्द्र गर्ग
kcg831@yahoo.com